23 / 01 / 80 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनुभूति

जीवन मे पवित्रता के महत्व की अनुभूति

➢➢ मैं स्वयं को एक महान पुण्य आत्मा के रूप में देख रही हूँ।

➳ _ ➳ मैं परमपिता परमात्मा की बच्ची महान पवित्र आत्मा हूँ

→ मेरे पवित्रता की ही महानता है जो मैं आत्मा पूज्य और गायन योग्य बनती जा रही हूँ।

→ "पवित्र बनो योगी बनो" बापदादा द्वारा दिया गया यह स्लोगन...

→ मुझ आत्मा के महान आत्मा बनने का आधार बनता जा रहा है।

→ मुझ आत्मा में पवित्रता की श्रेष्ठ धारणा होती जा रही है।

◆ मैं सर्व आत्माओं को पवित्र आत्मा बनाने के निमित्त बनती जा रही हूँ।

◆ मैं सर्व आत्माओ को अपवित्रता के आत्म घात से छुड़ाने के निमित बनती जा रही हूँ।

◆ मैं सर्व आत्माओं को पवित्रता का जीय दान देती जा रही हूँ।

● मैं सिद्धि स्वरूप आत्मा बनती जा रही हूँ।

● मुझ सिद्धि स्वरूप आत्मा की भक्ति मार्ग में भक्त गण विधि पूर्वक पूजन कर रहे है।

● भक्त गण मेरी यादगार "विजय माला" का सुमिरण भी पवित्रता के साथ विधि पूर्वक कर कर रहे है।

➳ _ ➳ मैं आत्मा अपने महान पवित्र जीवन के विशेषताओं को देखती हूँ।

→ मैं अपने ब्राह्मण जीवन के विशेष लक्षण आदि अनादि संस्कारो को देख रही हूँ।

◆ मेरे संस्कार पूजन योग्य बनते जा रहे है।

➢➢ पुरुषार्थ कर मैं अपने ब्राह्मण जीवन का जेवर अभी ही तैयार कर रही हूँ।

➳ _ ➳ मैं मास्टर दाता का स्वरूप बनती जा रही हूँ।

→ सर्व शक्तियों अर्थात ज्ञान और गुणों के प्राप्त सर्व खजाने से भरपूर...

→ मैं औरो के प्रति वरदानी, महाज्ञानी व महादानी बनती जा रही हूँ।

◆ अपनी वरदानी स्थिति के शक्तियों द्वारा

◆ वायुमण्डल व वायब्रेसन के प्रभाव से

◆ आत्माओ को परिवर्तन के निमित्त बनती जा रही हूँ।

➳ _ ➳ महाज्ञानी बन वाणी द्वारा व सेवा के साधनों द्वारा आत्माओं को परिवर्तित करती जा रही हूँ।

→ मेरी महादानी स्थिति द्वारा निर्बल, दिलशिकस्त असमर्थ आत्माओं को...

→ एक्स्ट्रा बल मिल रहा है।

◆ जिससे वे आत्मायें रूहानी रहमदिल बनती जा रही है।

➢➢ मैं सदा स्वच्छ अर्थात पवित्रता के सब्जेक्ट में सिद्धि स्वरूप बनती जा रही हूँ।

➳ _ ➳ मुझ पवित्र आत्मा का पूजन भी विधि पूर्वक होता हुआ देख रही हूँ ...

→ अष्ट देव के रूप में भी और इष्ट देव के रूप में भी।

◆ मैं स्वयं को अष्ट शक्तियों का प्रैक्टिकल स्वरूप ...

◆ अष्ट देव के रूप में प्रत्यक्ष होता हुआ देख रही हूँ।

➳ _ ➳ मैं विश्व-कल्याणकारी आत्मा

→ महान पवित्र

→ गायन व पूजन योग्य

→ कर्मयोगी, सदा स्व संकल्प और स्वरूप द्वारा सेवाधारी...

- पुण्य आत्मा, महादानी और वरदानी स्थिति का अनुभव कर रही हूँ।